सनि ∞ फनि
पवत्रि स्ंथानों पर प्रदर्शन

कश्ंमीर, उत्तराखंड, दल्ंली

© VestAndPage 2011
Verena Stenke & Andrea Pagnes
in coproduction with Sarai CSDS, New Dehli

Text: Andrea Pagnes
Translation: Rakesh Kumar Singh

परचिय

सिन ∞ फिन

रचनात्मक विचारों के महासागर में
और सृजन के तमाम पहलु
हमेशा मेरे जहन में मौजूद रहे हैं
अगर नहीं तो कम से कम
अदृश्य तौर पर ही सही
बस इसे जगाने वाले किसी दूत की ज़रूरत है
जो ये याद दिलाए कि दिलोजान से सहयोग करने के रास्ते हैं,
जहां वनस्पतियों, पशुओं, या फिर इस जटिल दुनिया को एकजुट किया जा सकता

सिन ∞ फिन

चैप्टर 1
भूखमरी गली

मैंने क्षण को कैद करने की कोशिश की
मेरे सपने अब और किसी चीज के बारे में नहीं बताते
वे खुद को सवालों के तौर पर पेश करते हैं
और सवाल छवियों के रूप में
क्या होगा अगर ये छवियां स्मृतियों की निर्माण-प्रक्रिया के महज़ अंश ही हुए
अंततः मैं अवचेतन में दाखिल हो जाउंगा
यह समय और नीयत के विरोधाभास सा लगता है
जैसे अपने पूर्वजों को मारने के लिए मैं बीते समय में लौट रहा हूं
और आज की अपनी पहचान और खुदी को नकार रहा हूं
विभिन्न प्रकार की अदृश्यताएं:
कोई वहां से क्या कहता है, और मैं उसे किस तरह सुनता हूं ?
जहां भी मैं जाता हूं, देखता हूं लोग भागे जा रहे हैं
अपनी जिदगी के लिए
ये लोग कौन सी भाषा बोलते हैं?
कौन सा गीत गाते हैं?
किस तहखाने की भीड़ बने हैं ये?
उनकी आत्मा में कौन से विचार और खयाल उमड़-घुमड़ रहे हैं?
कल्पना ही नहीं की कुछ, तो फिर पैदा ही क्या किया जा सकता है?
हिसा से बचने के लिए हम जाएं तो जाएं कहां?
हमारे देश अगर दूसरों के साथ केवल संभावित हिसा की ख़रीद-फ़रोख़्त करते रहे
तो फिर हम जाएंगे कहां?
बंद दरवाज़ों वाली वो जगह है कहां?
कहां लोग केवल खुदा को याद कर रहे हैं?
कहां निर्दोष लोग फंसे पड़े हैं?
कहां कोई मेरी हिफ़ाज़त करने आ रहा है?
कहां कोई नौजवान खून के साए में हैं और लोग उनके लिए दुआ कर रहे हैं?
जहां लोगों को ख़ानाबदोश कहा जा रहा है
कहां है वो जगह?
घर?

व्यवस्था में दरार है फिर भी
भय से आाजादी वाली आधुनिकता का महान वादा अब मलवों में दबा पड़ा है
भय एक माध्यम न कि संदेश
भय एक आनुशंगिक प्रभाव, प्रगति की शक्ति
भय यानी पनाह, घर, शैली, परंपरा, पात्र.
भय, एक और मौका, इकाइयों को दर्ज करने का, जो खेलता है और जीतता है
दुलार और आलिगन

सिन ∞ फिन

भय संभालता है और भय ही हिलाता है.
जहां किसी और का भय समाप्त होता है वहां से मेरा भय शुरू होता है.
इसे एक आकार दो, एक प्रतीक दो, एक घेरा दो, एक चमकीला धार दो.
संकेत, पंक्ति, प्रतीक, स्याह-सफेद और रंगीन निगाह
आवाज़ें दीवार पर चिपकी हुई हैं जो जीवंतता प्रदान करती हैं, और देती है प्रमाण
रौशनी, उससे भी ज़्यादा परिवर्तित होती है जिसके लिए उसे खींचा गया था.
क्रम के सहारे भय, चारदिवारियों से भी अपरिभाषित हैं
भौतिक, क्लांत, उकेरा हुआ, नक्काशीदार, वास्तविक या काल्पनिक स्वरूप
हवाओं को सूंघते हुए मैंने कोशिश की गुफाओं को पहचानने की,
वे गड्ढे और कोने
जहां भय विश्राम कर रहा था
मैंने अपनी आंखों के लिए धीमे इंद्रधनुष की कामाना की.

‘मैं यहां हूं’ किस्म का नक्शा कहां गुम हो गया?
जब मैं पैदा हुआ था तब तो यह कहीं नहीं था.
न होने के सुख को एक विचित्रता के तौर पर देखा गया,
कुछ जाने-बूझे के बीच आसानी से स्खलन ...
मैं कहीं बढना नहीं चाहता, लेकिन देखो हमने क्या पाया,
पेड़ों के लिए दियासलाइयां, और खुले हुए नाले.
बेथेलेहम, गाज़ा, कश्मीर, ल्हासा ... एक दूसरे की पहरेदारी करती, बहुत सी जगहें

सनि ∞ फनि

अध्याय 2
एकरूपी गली

तेज़ी से होती इस अदृश्यता में बहुत सी चीज़ों पर ख़तरा है:
क्या मैं भी क्षणभंगुर हूं?
सवाल रुकते नहीं.
जांच-पड़तालों के वजूद की अपनी वज़हे हैं .
रोज-ब-रोज के छोटे-छोटे रहस्यों को समझना,
न कि किसी पवित्र उत्सुकता के लिए सुध-बुध खो देना
ब्रह्मांड के अचल नियम निश्चित तौर से बेहद प्रभावी सीख दे सकते हैं,
जिस पर भरोसा है, हम उसे ही पतित्र मानते हैं.
मैं वैसे बहुत से मसखरों से मिल चुका हूं जिन्होंने निपुण होने की ख़ूब कोशशें की;
और उन शिक्षकों से जिन्होंने सिर्फ और सिर्फ दूसरों में ग़लतियां ढूंढना सिखाया
मालूम नहीं कि वे सब एक ही हैं,
पूर्णता जीवन की किसी एक अवस्था या स्थिति में निहित नहीं होती,
और सुंदरता लाभ सिद्धि का कोई रास्ता नहीं हो सकता या न ही किसी बेहतरी का;
यह केवल अपनी ही दिशा में बढता जाता है.

मैं वो नहीं हूं जो आप सोच रहे हैं
न मैं पूरब हूं और न पश्चिम
मैं तो बस कहीं और हूं.
मेरे दिमाग़ में हमेशा एक ही सवाल होता है, जो ग़लत होता है.

तमाम पवित्र इबारतें गहरे कुंड के मानिद हैं
कितने व्यापक हैं वे और कितने सरल?
दोस्ती, एक पवित्र बंधन, आपदाओं से ज़्यादा पवित्र बनी है.
होना मात्र वरदान है. जबकि जीवन पवित्र.
जिंदगी ढेर सारे कायदे-क़ानूनों वाला एक खेल है जिसमें कोई रेफरी नहीं होता.
छोटी सी चाहत, और फिर उसके लिए ढेर सारी गंदी कारगुज़ारियां,
फिर थोड़ी जीत और ख़ूब सारी हार.
तमाम चीज़ों पर पर्दा पड़ा है,
स्पष्ट, अश्लील, नाज़ुक और सुगम,
शर्म या आरोप के बिना, तुक या तर्क के बिना,
मुर्दों पर, यतीमों पर, या बेघरों पर इसका क्या असर पड़ता है,
पवित्रता के नाम पर विध्वंस का पागल खेल चालू है,
आज़ादी, लोकतंत्र और विश्वायन का?
अपने व्यक्तिगत पतन को याद करना
मेरे मन में एक पवित्र दुःख पैदा करता होता है.
अब चीज़ों का विन्यास,
अपने जीवन में उस व्यक्ति को पाना है

सिन ∞ फिन

जिसके साथ मैं रह सकूं.
सपने बढते हैं ताकि प्रक्रिया आगे बढे
मैने पीने से चूक गया:
सोचा मयखाने सचमूच पाक जगहें होती है.

खरीदा हुआ उपहार होता है
स्वामित्व साझा नहीं होता
फेंका हुआ हर जगह पाया जाता है
'साक्ष्य' क्या है?
खुले दरवाज़े पर टंगे चिथड़े पर्दे.
गहराती रातें.
टिमटिमाने वाले बल्ब.
मैं अंडे के अंदर के सफेद की तरह छलकने को तैयार हूं.
मुझे हल्के ढंग से छूने की जरूरत है,
मेरे कोर कोमलता से सपाट हो चुके हैं,
शायद मैं रो पड़ूं और अर्थहीन बन जाउं.
जरूरी ये है कि भविष्य पूर्वजों की तरह दिखने लगे,
जैसे-जैसे सूर्यास्त फैलता जाता है क्षितिज का नास्तित्व उसे घेरने लगता है
पानी में आया सूक्ष्म बदलाव समय पथ को चिन्हित करता है,
या फिर समयहीनता के प्रभाव को उत्पन्न करता है:
कभी-कभी नलके से पानी गिरना बंद हो जाता है.

आप अपने जीवन के उस क्षण में पहुंचते हैं जब,
आपके जानने वाले लोगों में से
मरे हुओ की तादाद जिंदा लोगों से ज़्यादा हो जाती है.
तब मन और नए चेहरों तथा और भंगिमाओं को स्वीकारने से इंकार कर देता है.
हर वो नया चेहरा जो आप देखते हैं, उस पर पुराने स्वरुपों के छाप दिखलाई पड़ते हैं,
और फिर सबसे योग्य नकाब आपको मिल जाता है.
ये उस व्यक्ति के बारे में नहीं है जिनका जिन्दा न होना किसी और की स्मृति में खलता है.
और यही वो है जिसे कोई प्रसारित करता है, सुनाता है, याद करता है और साझा करता है,
हर व्यक्ति यह मानता है कि वो गुप्त खजाने का मालिक है,
और यह सामान्यता के भ्रम को बनाए रखने के लिए.
ऐसी कोई व्यक्तिगत या वैश्विक समस्या नहीं
मेरे हिसाब से जिसका हल मुमकिन न हो किसी न किसी परिधि में.
हर चीज़ मुमकिन है किसी और चीज़ की वजह से.
हर चीज़ किसी और चीज़ की रद्दोबदल है.
भूत वर्तमान में बुलाया गया है.
किसी से पूछना कि वो इस जगह क्यों आए हैं दरअसल ये पूछना हुआ कि उस जगह को उन्होंने क्यों छोड़ा है

सारी चीज़ें दरक रही हैं
मैं फिर भी खुद को संबंधों के परिप्रेक्ष्य में ही परिभाषित कर रही हूं

सनि ∞ फनि

फरि भी इतनी बंटी हुई, और अंदर से तो और भी ज़्यादा बखिरी हुई.
पूरणता को लेकर अंध-समझ :
मैं खुद से कुछ छपिाने के लिए बदलती हूं
मैं उस अवस्था में आ चुकी हूं, जहां मैं लोगों को देखती हूं और कहती हूं ....
वे हैं, क्योंकि उन्होंने इस या उस स्थिति से खुद को काटे रखने का चयन किया है.
लोग खुद को औरों से अलग कर या खुद में सिमट कर संतुलित दिखते हैं
कभी-कभी मैं लोगों से मिलती हूं, और पाती हूं कि वे चारों तरफ से दरके हुए हैं
वे टूटे हुए हैं,
फरि मुझे ऐसा लगता है कि
उन्होंने किसी चीज़ के प्रति खुद को खुला छोड़ा हुआ है.
बहुत बार मैं इस नतीजे पर पहुंची कि मैं ग़लत हूं
हर व्यक्ति चाहता है कि सामने वाला उनके प्रति उदार हो.
मैं चाहती हूं कि कोई एक व्यक्ति होता जिसके साथ मैं बात करती,
जो मुझे समझ पाए,
मेरे प्रति उदार हो.
यही मेरी असली सोच है.

सिन ∞ फिन

अध्याय 3
रेलिक्स लेन

यह अब भी पनपता है और अंकुरित होता है,
कब्रगाह, खेत, तालाब, पहाड़ और समुद्र में मिलने तक नदियां.
संगीत. कविता.
मुमकिन है सवेरा होगा (या लौट ही जाए)
अनमोल संसाधनों के लिए,
बनने वाले संसाधनों के लिए.
खून न बहाओ, अभी मौत न अख्तियार करो, न चिल्लाओ,
हमारा घर अब नहीं रहेगा सुदूर, है वो कठिन जन्नत.
रास्ते में तरंगे उठती रहती हैं, फिर भी वे इंतजार करते हैं
लेकिन किसी एक तरंग को भी यह मालूम नहीं होता.

मैं जिद्दी किस्म की हूं.
ग्रह के चारों ओर घूमती हूं, अपने निशान छोड़ती हूं, कुछ घावों को चूमती हूं.
सूरज उगने के साथ तारे साथ-साथ चलने लगते हैं,
किससे वे चिपट रहे हैं, उसे जाने बिना ही
कुछ अदृश्य हो जाते हैं.
अगर लंबे समय के बाद कोई संभलता भी है
तब तक फफूंदी लग चुकी होती है, और दिखती चमक भरी है.
मैं इसलिए चारों ओर नही भाग रही कि ये खो जाए
अगर मुझे कोई परित्यक्त तारा मिल गया
तो मैं उसे अपने सफेद हाथों में लूंगी, उन्हें नहीं पता है कि उन्होंने क्या ले रखा है.
मैंने तो इसे ले रखा है, और अपनी छाती से चिपका रखा है.
पसलियों और दिल की दीवारों के बीचोंबीच,
जहां ये गर्म रह सकें, लेकिन मैं इसे आंक नहीं सकती.

हर चीज़ का वजूद है और किसी चीज़ का नहीं.
प्रत्येक में से कुछ भी नहीं.
कोई एक था और कोई एक नहीं भी.
अब यह कथन बहुत अलग है.
द्वैतवाद के रूप में प्रस्तावित किया गया कोई विषय
मतलब : 'कोई है और कोई नहीं'.
किसी अच्छे का अंश या फिर कुछ भी नहीं.
अब तक कोई भी नहीं पहुंचा, कोई भाग नहीं ले रहा है.
जो नहीं था, उसे अब होना है. लेकिन शायद वो बाद में आए.
इसलिए, यहां दो हैं,
एक जोड़ा, एक बातचीत या फिर संवाद:
कोई एक नहीं और न ही इसकी कमी,

सनि ∞ फनि

बल्कि जो है उसका एक प्रतिरूप,
प्रतिरूप, शायद मृत्यु, विलुप्त हो जाने का जोखिम?
एक ही समय में जो था और जो नहीं था?

रौशनी और अंधेरे बादलों की तरह मेरे पूरे शरीर में निरंतरता प्रवाहित हो रही है.
कुछ हो रहा है मुझ पर
जीवन ने मुझे विस्मृत नहीं किया,
अपने हाथों में इसने मुझे थामा हुआ है.
यह मुझे गिरने नहीं देगा.
जैसे बिल्ली की नौ जिन्दगियां होती हैं, मुझे उम्मीद है मेरी भी वैसी ही है.
ऐसा हो नहीं सकता?

प्रतिक्रियास्वरूप किया गया नकार नए भय पैदा कर सकता है.
पिछले राखों से पैदा हुआ, विभिन्नता का भय स्वीकृति का भया होता है .
भय किसी और आत्म का रूप ग्रहण करता है जो परिवर्तन की ओर ले जाता है.

विध्वंस, पूरी तरह प्रतिरोध का मामला है.
पीड़ा पर विजय हासिल करता है, बहुत सी जिदगियों को बढाता है.
उन्हें देखो, महसूस करो. मैं करता हूं.
किसी होनी के इंतजार में, पत्थर अब भी खड़े हैं,
वे अस्तित्व की जिद्द पर डटे हुए हैं.

रिक्त का अस्तित्व, दुनिया के अवशेष, दुनिया की सौन्दर्यपरक छवियों के अवशेष हैं,
सार्वजनिक रूप से ज्ञात भौतिक नियमों के अनुरूप नहीं
बल्कि सद्भाव की खोज और ऐन्द्रिय अनुभूतियों के बीच संतुलन के रूप में.
यह पूर्णता को अर्थ देता है,
और अन्य स्थान का सृजन कर सकता है,
हालांकि नवीनीकरण की संभावनाओं से लैस,
संभावित अनुकूलन के प्रायोगिक परिणामों:
जगहों में हुए फेरबदल के जवाब और हल पाने की इच्छा को रक्षित रखते हैं.

पवित्रता, पाप और आज़ादी,
स्वीकृत न किए गए विकासपरक स्थानों को फलने-फूलने की जगह दे सकते हैं.
अनियंत्रित पर्यावरणों और पर्यावासों के जनक,
संदिग्ध भूभागों में, मुमकिन है कि डर के मारे नाचने लगें
समकालीन पहचान के उद्दातीकरण में तब्दील हो जाएं.

सिन ∞ फिन

अध्याय 4

ड्रिफ्टिंग लेन

मैं उस काल-कोठरी में पहुंच चुका हूं जो सबसे बुनियादी तत्व है
- जहां एक-दूसरे से विलक्षण रूप से जुड़े भूत और वर्तमान का
भंजन हो रहा है.
काल कोठरी से प्रस्फुटित हो रहे अणु
ये सूचना नहीं देते कि काल कोठरी में क्या गिरा है.
टनों पंख उड़ा दो, या ईंटें फेंक दो,
काल कोठरी से निकलने वाले अणु वैसे के वैसे ही रहेंगे.
जो नष्ट हो गया उसका कोई निशान नहीं है.
एक बार जब काल कोठरी अदृश्य हो जाएगी,
इसकी अन्तर्वस्तु से जुड़े तमाम ज्ञान और तमाम सूचनाओं के लिए तुम कहां जाओगे?
संपूर्ण का मतलब उसके अंशों का जोड़ नहीं है
उद्गम और गंतव्य धुंधले होते हैं.
वे फंदे, चक्र और सांचे बन गए हैं.
उनका अन्वेषण बुने हुए अभिप्राय के निथारने जैसा है.
उन्हें अलग करने की ज़रूरत है
भूत और वर्तमान को एक साथ संभालना
उसके मार्फत भविष्य के रिसाव के लिए जरूरी है.
ये धरती इत्र और पेशाब के बीच भेद नहीं करती.
अपमानित और धिक्कारे हुओं के बीच भी नहीं
यह सबको समाहित करने की कोशिश करती है, सबको रोपने की कोशिश करती है.
अब मैं सेचता हूं, मैं जानता हूं कि सुंदर चीज़ें कठिन क्यों होती हैं.

दुनियावी हलचलों के बारे में जानना हमारे शरीर को चौकन्ना करता है.
मेरी उंगलियां इटली की तरफ घूमती हैं,
मेरे पैर चीन की दीवर की तरफ टहलते हैं,
मेरा सिर मेगेलन हवा में सैर करते हैं,
मेरा मुंह मैक्सिको का स्वाद लेता है,
मेरे कान न्युयॉर्क में सुनते हैं,
मेरे आंख भारत को देखते हैं,
मैं इराक के बारे में सोचता हूं,
मेरा दिल जापान में भ्रमण करता है,
मैं ज़रूरत से ज़्यादा खिचा हुआ महसूस करता हूं,
ये मानसिक और भावनात्मक कलाबाजियां,
शायद इस टूट-फूट के साथ न्याय करने की आज़माइश हों
मेरी भौतिक योग्यताओं को बढाकर.
लेकिन जर्मनी को ढोते हुए मैंने अपने कंधे को जख्मी कर लिया है.
क्या वैश्विक शरीर के लिए कोई प्रशिक्षण हो सकता है?

सिन ∞ फिन

कहां है वो प्रशिक्षक?
और क्या मैं खुद को इंकार कर सकता हूं?
क्या मेरे पास सीमाएं हैं ?
क्या मैं एक देश हूं?
क्या मैं कोई जगह हूं?

मेरा ह्रदय मुझे याद दिलाता है ...
मैं पानी हूं, जो शरीर बन गया है,
और धरती, आग, समय प्रासंगिक होते गए.
मैं हूं आग, गहराती हवा.
समय का बहता पानी, स्थायी नही हूं मैं
मैं पानी हूं, जो शरीर बन गया है, और तब धरती इसे पी जाएगी.
आग हूं मैं, एक सघन गहराता बादल धैर्यहीन.
धरती पर बहने वाली हवा हूं मैं, और समुंदर पर फैले कब्रगाह.
मैं उड़ने वाला समय हूं,
जबकि मेरी मृत्यु मेरे साथ चलती है उल्टी दिशा में घूमने वाली घडियों की तरह.

आधी दुनिया के पार करुणा और क्रोध अपने खेल को प्यार करते हैं
एक सुबह मैं जगता हूं,
मेरे तन्तु लगभग पूरी तरह ठंडे पड़े हैं,
मेरी आवाज़ पूरी तरह समाप्त हो चुकी है.
कुछ भी नहीं बचा है मेरे पास कहने के लिए
विचारों और शब्दों की कमी पड़ गयी है,
मेरे गले को भरने के लिए केवल कुछ थकाउ ध्वनियां बची हैं.
संवेदनाओं और हर्ष की भारी कमी हो गयी है मुझमें
सबकुछ है मेरे आपसास लेकिन अपना कहने के लिए कुछ भी नहीं.

मैंने बहुत सी चीज़ों का वादा किया और बहुत सी चीज़ों की कोशिशें कीं
अपनी रोशन प्रज्ज्वलित रखने के लिए, जो कुछ भी था मेरे पास, सबका इस्तेमाल किया.
लेकिन नहीं, कुछ भी नहीं बचा था जलाने के लिए,
गरमी बनाए रखने के लिए दिल भी नहीं बचा था.
अगले दिन मैं वापस घर आया,
शिराएं खंडित हो चुकी थी.
मैंने कभी जिन तमाम चीज़ों के सपने संजोए थे, बस वे मेरी जिह्वा को पोषित कर रहे थे.
हां, मेरा शरीर कहता है :
अगर मैं विवेक को भवनाओं से छलता हूं, तो मैं भ्रम पैदा करता हूं.
अगर एक शरीर बोलता है, तो दो शरीर बातें करते हैं:
वे करुणा के चलते इतने वास्तविक दिखते हैं.
धीमे बदलाव अलग कर सकते हैं,
लेकिन दूरियों को कम करना ऐसा है मानो चीज़ों के माध्यम से देख रहे हों.
जो भी मैं करता हूं, क्या वे मुझे भूलने में मदद करते हैं?

सिन ∞ फिन

अध्याय 5
रेवरी लेन

तमाम समझदारी इन पर टिकी है:
ह्रदय त्वचा को आकर्षित करता है, यह हमारे लिए आनंद का विषय होना चाहिए,
इमानदारी से खड़ा हो जाना,
यह जानना कि हमारी अस्थियां मांस के अंदर आसानी से विचारण कर रही हैं.
मैंने खुद को मारने की कोशिश की, असफल रहा, खुद को अंधा कर लिया,
और अब मैं उस खुद को रोकने वाला बन गया हूं जो खुद को मारना चाह रहा था.
दूसरा सबसे अच्छा कुछ भी हो, लेकिन रहेगा दूसरा सबसे अच्छा ही
मैं उस ओर देखता हूं जो बांटता है और अलग करता है,
मैं उस ओर नहीं देखता जो दोनो में सामान्य है.
मैं दूसरों को राजी करने की कोशिश करता हूं,
और अंत में खुद को समझाता पाता हूं,
किसी तरह की श्रेष्ठता के दृढ विश्वास से प्ररित
प्रत्येक चीज़ में अतिसरलीकरण है,
और ज़्यादातर में लचीलेपन का खौफ़
जब तक मुझे ज़रूरत नहीं होती,
मैं सभी चीज़ों के अतिरिक्त कोई भी चीज़ नहीं मांगता

क्या आप मेरे हाथ देख रहे हैं?
इन हाथों से मैं किसी को पकड़ सकती हूं, अपने क़रीबियों को प्यार कर सकती हूं,
किसी को मार सकती हूं, नुकसान पहुंचा सकती हूं.
मैं सृजन और विध्वंस कर सकती हूं, मिला सकती हूं और जुदा कर सकती हूं.
मुझे कहा गया कि अगर मैं अपने हाथ उठाउं तो मैं खुदा तक पहुंच सकती हूं,
अगर मैं इन्हें फैलाउं तो मैं पूरी दुनिया को अपना बना सकती हूं,
यहां से वहां, इस जगह से उस जगह, यात्रा करते हुए, घूमते हुए,
जुड़ने की कोशिश करती हूं.

चिरस्थयी ग़ैरमौजूदगी से मुझे कोई दिक्कत नहीं है.
तब मैं 'सामान्य' होती हूं :
यह मेरी उत्तरजीविता की शर्त है;
अगर मैं इसे नहीं भूली तो मुझे मृत्यु का वरण कर लेना चाहिए

भय संदिग्धता पर एकाधिकार जमा कर सफल होता है;
यह समय और परिस्थिति को थाहने की क्षमता के तहत ही यह साया गढता है.
अगर मैं खुद को इसके बारे में लगातार याद दिलाती रहूं,
तो मेरे पास भय की कोई वजह नहीं बचेगी,
सोचने के लिए न कोई विचार. रोने के लिए न कोई आंसू.
सब निचुड़ा हुआ सूखा.

सनि ∞ फनि

मौत से खुश.
मैं कांच की प्याली के द्वारा अपनी छवि निहारती हूं.
यह भृकुटियों के बीच चक्राकर प्रकट होता है.
क्या इसी को 'पवित्र/दैवी' कहते हैं?
मूर्च्छति स्मरण में धुंधलाते हुए को पुनः एकत्र करने के लिए
मुझे अपना आचारण ठीक रखना होगा
जबकि बहुत सी छवियां बीते समयों की लत में स्थापित हो चुकी हैं.

सनि ∞ फनि

अध्याय 6
जंक्चर लेन

समय के बारे में जो सबसे दर्दनाक बात है वो ये कि कुछ भी विनाशकारी नहीं होता.
यह सब ग़लत कुरूप नाखुश और नीरस,
और कुछ भी त्रासद नहीं,
किसी चीज़ या व्यक्ति को बदलने वाला कोई क्षण नहीं होता.
निजी आपदाओं का लैंडस्केप दिखाती है
समय-समय पर भावुक बिज़ली चमकती है,
और, तब हम बस नाचने-गाने लगते हैं.

मैं अब भी हर काले में सफेद के अवशेष पहचान सकती हूं,
हर सफेद में थोड़ा-थोड़ा स्लेटीपन
और गहराई में धंसा हरापन,
एक दूसरे के लिए अलंघनीय.
हालांकि, जो कुछ भी हुआ, उनके बावजूद,
मेरे आने वाले कल में बीते हुए कल का कुछ भी नहीं है.
जो आने वाले कल को बीते हुए कल में ढूंढने की कोशिश करते हैं
वे बुरी तरह दिग्भ्रमित हैं.
यह नदी अपने आप को दोहराएगी नहीं.
यह बहती चली जाएगी.
कुछ था और कुछ नहीं था
वही पुरानी कहानियां और जगहें ,
केवल विभिन्न परिस्थितियों या चरणों के कारण
कोई आकार बदल भी सकता है.
वास्तविक जीवन की दुविधाएं और परिस्थितियां
'इसे सही करो' या 'ग़लत करो' के सवाल नहीं हैं.
ये तो शांति की खोज की कुछ अभिव्यक्तियां हैं.
और फिर भी, ये सारी जटिताएं हैं.
क्या रहेगा और क्या बच जाएगा?
परेशानियों पर भरोसा करके, अपने संदेहों को उकेर के शायद खुद मैं उलझ जाउं
या फिर वापस निर्माण में जुट जाउं.

सिनि ∞ फिनि

अध्याय 7
ब्लेंड लेन

जो यहां है, उसे हम हर जगह तलाश रहे हैं,
जो यहां नहीं है, वो कहीं और भी नहीं है.

एक विस्तार बनता जा रहा रहा है.
वहां जो स्थान था, वो बढा है.
हम एक भीड़ से निकल रहे हैं वैसे ही जैसे कोई धागा सूई से गुज़रता है.
अगली बार के लिए अंतहीन इंतजार की तरह, यह स्थिर खड़ा रहने जैसा है,
विश्राम के लिए एक छाया की अंतरंग चाहत को पोषने की कोशिश करता हुआ,
या फिर लंबा समय बीत जाने के बाद भी वापसी की इच्छा.

मैं बहुत सी वास्तविकताओं को जीता हूं,
लेकिन इनमें से केवल एक ही मेरे जीवन का आलंब है.
वो क्या है जो मेरी ‘खुदी’ का निर्माण करता है?
अलग-अलग तारीखों की रौशनी म.
जब मैं एक तरीक़े से खुद को देखते हुए सहज हो लेता हूं,
फिर कोई चीज़ मुझे यह याद दिलाती है कि मैं कहां का बाशिदा हूं,
मेरे शरीर पर कौन-कौन से निशान हैं,
अब भी मेरा चेहरा भीड़ और बादलों के बीच छुपा हुआ है,
या फिर मोहर के नीचे, पहले के समय से इतर, अलग रंग की रोशनाई के साथ.

खुली जगहों को लेकर मैं बहुत तेज़ी से बीते समयों में उतर जाती हूं
उन ‘अस्थायी’ संरचनाओं से पहले का समय जो कभी नहीं छूटता.
ये सब मुझे सुरक्षित और निर्भय बनाने के लिए.
किस चीज़ से सुरक्षित?
खुद मैं, मेरा कमज़ोर पक्ष, समाज ?
मेरे संबंध, मेरे दु:स्वप्न, विचार या मेरा भरोसा?
मेरे अधिकार, मेरे दोस्त, मेरे दुश्मन? मेरे सपने?

मुझमें भरोसा रखो.
अपनी आंखें बदं रखो ओर मुझ पर भरोसा करो.
यह जानते हुए कि मैं आसपास हूं तुम सुरक्षित और गहरी नींद सो सकते हो,
उतर सकते हो शांत मांस में.
तैर सकते हो चमकीली धुंध में.
धीरे-धीरे और निश्चित तौर
पे तुम्हारी इंद्रियां प्रतिरोध करना बंद कर देंगी.

सिन ∞ फिन

निकास

अगर यह तुम्हारी अभिलाषा है
कि मैं अब और न बोलूं
और मेरी आवाज़ स्थिर हो जाए जैसी पहले थी,
मैं नहीं बोलूंगी
मैं तब तक सब मानूंगी जब तक मेरे लिए कोई बोले नहीं.
अगर यह तुम्हारी अभिलाषा है.